पंचम अध्याय

उपसंहार

उ प सं हा र

स्वतन्त्रता के बाद के उपन्यासकारों के एक वर्ग ने मुख्यत: नगरीय महानगरीय सन्दर्भों से सम्बन्धित मूल्यों के संकट और विघटन को केन्द्र मानकर उपन्यास लिखे, एवं बदलते हुए परिदृश्य में उन्हें गति दी, इनमें ही राजेंद्र यादवजी का नाम लिया जाता है। उनके अधिकतर उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार और व्यक्ति के स्तर पर होनेवाले बिखराव और टूटन का चित्रण सफलता से किया गया है, क्योंकि व्यक्ति के स्तर पर देखा जाए तो उपन्यास का हर कोई पात्र बिखराव एवं निराशा का शिकार बना है। ` सारा आकाश` उपन्यास में` समर` अंत में आत्महत्या करने की बात सोचता है, उसका मन कहता है .... कूद जा .... कूद जा घबराकर वह उपर देखता है तो ` सारा आकाश ` डग-डग करता घूमने लगा था, एवं समर की बहन मुन्नी आत्महत्या करती है। ` उखडे हुए लोग` का शरद ` मंत्रविध्द ` का तारक ,` कुलटा` का तेजपाल सभी पात्र जीवन के संघर्ष में असफल होते हुए दिखाई देते है।

राजेंद्र यादवजी ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्गीय, निम्नमध्यम वर्गीय परिवारों को लिया है। उनका जीवन संयुक्त परिवार में बीता इसी कारण शायद उन्होंने ` सारा आकाश` उपन्यास में संयुक्त परिवार के विभिन्न रुपों को दिखाया है एवं आज के युग में यह प्रथा क्यों टूट रही है इसका चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में जितने दाम्पत्येतर सम्बन्ध लिये गये है उनके संदर्भ में शोधप्रबंध में` सारा आकाश` को लिए विशेष विवेचन चतुर्थ अध्याय में किया है।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में परिवार का स्वरुप, विश्लेषण करते हुए प्राचीन तथा अर्वाचीन विद्वानों के प्रकाश में परिवार शब्द की ` व्युत्पत्ति `, परिवारविषयक भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणाओं को देखने के बाद परिवार के अत्यधिक महत्व के बारे में उल्लेख किया है। ` परिवार` समाज की महत्वपूर्ण संस्था है, जिसे मानव के आत्मसंरक्षण , वंशवर्धन और जातिय विकास के हेतु निर्माण किया है। भारतीय संस्कृति में परिवार से सम्बन्धित` वसुधैवकुटुम्बकम् ` की विस्तृत व्याख्या दी गयी है, उसका विस्तार से विवेचन हुआ है। विविध परिभाषाओं से अंत में परिवार उसे कहते है जो - परिवार एकाधिक व्यक्तियों का वह समूह है, जो विवाह या रक्तसम्बन्ध के कारण पारस्परिक हितचिंतन करते हुए साहचर्यभाव से, एक ही घर में रहकर वैयक्तिक विकास करने के लिए साथ - साथ` परिवार` के व्यक्तित्व का भी निर्माण करता है।

परिवार के वर्गीकरण सम्बन्धित विस्तार से चर्चा की गयी है। प्रथमत: परिवार का वर्गीकरण किन किन आधारोंपर किया जाता था, जैसे पितृमूलक, मातृमूलक, एक पत्नी परिवार ` बहुपत्नीत्व, बहुपतीत्व एकाकी एवं संयुक्त परिवार है।

अंतत: यही स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल से यह संस्था मनुष्य के जीवन में अनन्यसाधारण महत्व रखती है विभिन्न देशों एवं प्रदेशों में समय - समयपर परिवर्तन होने पर भी मनुष्य के लिए परिवार अत्यावश्यक है एवं मनुष्य के लिए कल्याणकारी साबित हो गया है।

द्वितीय अध्याय में राजेंद्र यादव जी के जीवन एवं कृतित्व का परिचय दिया है। उनका बाल्यकाल और कैशार्य संपन्नता में बीता, संयुक्त परिवार में ही वे बडे हो गये। बचपन में उनकी टांग टूटने से वे विकलांग बने थे मगर शारीरिक गतिविधियाँ सीमित हो जानेपर वे निराश नहीं हुए। उन्होंने अपना ध्यान बौध्दिक क्षेत्र की ओर लगाया। और लेखनकार्य में उनकी गति बढी। उन्होंने सात उपन्यास लिखे, अंतिम सातवा उपन्यास `एक इंच मुस्कान` अपनी पत्नी मन्नू भंडारी के साथ मिलकर लिखा एवं ग्यारह कहानी संकलन, कविता संकलन, इन्हें संकलित किया। संस्मरण, आलोचना आदिका लेखन कार्य करते हुए संपादन कार्य भी किया।

तृतीय अध्याय में उनके उपन्यासों का संक्षिप्त में समीक्षात्मक कथा - वस्तुओं का परिचय दिया है। उनके यह सात उपन्यासों में परिवार का स्वरुप अलग अलग दिखाई देता है। `सारा आकाश` उपन्यास में संयुक्त परिवार का चित्रण करते हुए आज के जमाने में ये परिवार किस रुप में टूट रहे है इसका चित्रण किया है। इसके साथ ही पति-पत्नी के बीच संवादहीनता की स्थिति निर्माण हो जाने के बाद की स्थिति का समग्र चित्रण पाया जाता है। `उखडे हुए लोग` में ऐसा परिवार दिखाया गया है कि जो परिवार का ही आधुनिकतम रुप है। बिना विवाह करते हुए शरद एवं जया दाम्पत्य जीवन बिताने का फैसला करते है। एवं यह उपन्यास दुहरे संघर्ष की कहानी भी है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को ही लक्ष्य बनाया है। यह संघर्ष परिवार की दृष्टि से प्रेम और विवाह की समस्या को लेकर है तथा साथ ही बाहर के आर्थिक शोषण की समस्या को भी पूर्ण रुप से उभारने का प्रयत्न करता है। मायादेवी, देशबन्धु के समान पात्र किस प्रकार अपने ही परिवार को उध्वस्त करते है इसका समग्र चित्रण हुआ है। `कुलटा` उपन्यास में मध्यमवर्ग की बीनूने मिसेज तेजपाल को बडी घृणा के साथ `कुलटा` कह दिया है। पति - पत्नी के सम्बन्धों की दरार को दिखाया है अगर दोनों के स्वभाव में मेल न हो जाए तो वह दम्पति अनमेल जोडा शापित

होता है और ऐसे परिवार का बिखराव भयंकर होता है जैसे मिसेज तेजपाल वायोलिनवादक के साथ भाग जाती है तथा मिस्टर तेजपाल पागल होते है। यह प्रतिकुल दाम्पत्य जीवन की परिणति है। `शह और मात` उपन्यास में भी मध्यवर्गीय परिवार एवं उच्चवर्गीय परिवार दोनों में विवाह के धरातलपर समस्या एक ही हो सकती है इसका चित्रण पाया जाता है। `अनदेखे अनजाने पुल` उपन्यास में निम्नमध्यमवर्गीय परिवार में बदसूरत लडकी का होना एवं उसकी असहनीय मानसिक पीडा के बारे में विवेचन मिलता है। परिवार की बिगडी हुई स्थिति एवं समाजव्दारा पीडन यही इस में है। `मंत्रविध्द` उपन्यास का कथ्य घटित और घटनीय के बीच का तनाव - क्षण है। इस तनाव का शिकार तारकदत्त है जो बंगाली है, प्रथम विवाह हुआ है, तीन बच्चे भी थे फिर भी पंजाबी युवती सुरजीत से प्रेमविवाह करता है मगर अंत में टूटा हुआ नजर आता है। अंतिम उपन्यास `एक इंच मुस्कान` सह्योगी उपन्यास है। इसमें कलाकार की पीडा को वर्णित करते हुए व्यक्तियों के निराशा के टूटन का चित्रण पाया जाता है। `अमला` परित्यक्ता स्त्री जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण स्वच्छंदता का है, जीवन एक उन्मुक्त धार माननेवाली मगर अंत में आत्महत्या करती है। अमर विवाह को अंत में बंधन मानकर रंजना से अलग हो जाता है मगर सुख नहीं पाता, प्रेम विवाह करते हुए भी परिवार को संभाल नहीं सका। इस प्रकार राजेंद्र यादवजी ने हर एक उपन्यास में टूटते परिवार एवं व्यक्तियों के बिखराव को दिखाया है, परिवार का टूटना ही व्यक्तिका टूटना है।

चतुर्थ अध्याय में यादवजी के उपन्यासों में परिवार सम्बन्धित विविध रुपों को दिखाया है उनका विश्लेषण विस्तार से किया है। परिवार के हर पहलू को दिखाने की कोशिश की है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत विभागों को विभाजित किया है।

प्रथम `क` विभाग में परिवार के रुप कौन कौन से है यह स्पष्ट किया है। `सारा आकाश` में संयुक्त परिवार है। `उखडे हुए लोग`

में आधुनिक परिवार का नवीनतम रुप एवं बाकी उपन्यासों में मध्यनिम्नवर्ग का चित्रण मिलता है। `सारा आकाश` के संयुक्त परिवार के विवेचन से स्पष्ट होता है कि, आधुनिक काल में, विचार-प्रणाली में परिवर्तन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, घरेलु समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ इनके कारण संयुक्त परिवार टूट रहा है। `सारा आकाश` का कथानक पारिवारिक विघटन को लेकर है, इसका विस्तार से विवेचन हुआ है, तथा अन्य उपन्यासों में भी किसी न किसी प्रकार से परिवार में बिखराव निर्माण होता है एवं परिवार के लोगों की कोमल भावना में किस प्रकार नष्ट होती जा रही है यह स्पष्ट किया फिर भी यह कोमल भावना पूर्णरुपसे खत्म नहीं होती। `ख` विभाग में दाम्पत्य जीवन का चित्रण करते हुए सफल एवं असफल दाम्पत्य जीवन के विवेचन से यही स्पष्ट होता है कि परिवार में सफल दाम्पत्य जीवन की अपेक्षा असफल दाम्पत्य जीवन ही ज्यादा मात्रा में देखने को मिलता है। सभी उपन्यासों के दाम्पत्यों में किसी न किसी प्रकार का मनमुटाव दिखाई देता है। भारतीय परिवारों में दाम्पत्य जीवन के दो रुप है जो उपर बताए गये है। `ग` विभाग में दाम्पत्येतर सम्बन्ध की चर्चा की गई है। परिवारों में केवल पति-पत्नी का ही सम्बन्ध महत्वपूर्ण नहीं है, पति - पत्नी के अतिरिक्त माता, पिता, सन्तान, भाई, बहन और अन्य सम्बन्धी भी होते हैं। राजेंद्र यादवजी ने `सारा आकाश` उपन्यास में पूरे सम्बन्धों को दिखाया है इसलिए `सारा आकाश` को यहाँ खोलकर,गहराई में जाते हुए विश्लेषित किया है वैसे `उखडे हुए लोग,`` शह और मात`, अनदेखे अनजाने पुल`, `कुलटा` इन उपन्यासों में भी यह सम्बन्ध है मगर विशेष घटनाओं के संदर्भ में है। इस अर्थ में `सारा आकाश` में यादवजीने परिवारों में दिखाई देनेवाले सम्बन्धों की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की है।

`विवाह` मानवजीवन में विवाह को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है इसका समूचा विश्लेषण `घ` विभाग में किया गया है। हिन्दुओं में `विवाह` एक सामाजिक आवश्यकता ही नहीं अपितु वह प्रत्येक व्यक्ति का

एक अनिवार्य धार्मिक ,कर्तव्य भी समझा जाता है। हिन्दु विवाह में ` विवाह` के समय कुछ रस्में जैसे वाग्दान (सगाई), विवाह की तिथी, रतजगा, व्दाराचार, सप्तपदी , विदा आदि विधियाँ की जाती है। राजेंद्र यादवजी के ` सारा आकाश` उपन्यास में जहाँ इन रस्मों की झलक है, वहीं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित इन रस्मों के परिवर्तित रुप को भी दिखाया गया है। प्रथम विवाह के व्दारा समाज से पुरुष-नारी एकसाथ रहने के अनुमति प्राप्त कर लेते है, इस प्रकार उसमें नैतिकता का समावेश रहता था, परन्तु आज इसका महत्व भी कहीं कहीं कम होते नजर आ रहा है - जैसे कि` उखडे हुए लोग ` उपन्यास में शरद और जया बिना विवाह के पति पत्नी के रुप में एक साथ रहते दिखाई देते है तथा आधुनिक युग में शिक्षित नारी भी विवाहित पुरुषों से एक दो बच्चे के पिता होते हैं विवाह करना अपनी शान समझती है - जैसे ` मंत्रविध्द ` उपन्यास में।

` च ` विभाग में वैवाहिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इसके बाद नारी समस्या, परित्यक्ता नारी समस्या, दहेज समस्या एवं आर्थिक समस्या आदि समस्याओं का परिवार से गहरा सम्बन्ध होता है क्योंकि परिवार की हँसी खुशी बहुत कुछ इन्हीं समस्याओं के होने या न होनेपर अवलम्बित है।

राजेंद्र यादवजी के सभी उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात यही निष्कर्ष निकलता है कि समस्त उपन्यासों में विघटित परिवार का चित्रण कम या अधिक मात्रा में किया गया है।

अंत में विस्तृत विवेचन से स्पष्ट होता है कि दाम्पत्य जीवन एवं टूटते परिवारों के प्रमुखतम् कारण आधुनिक विचारप्रणाली, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, आधुनिक शिक्षा प्रणाली एवं नये बदलते दृष्टिकोण ,नगरों की उच्च - शिक्षा, नारी जागरण आदि हैं। आजकल तो स्त्रियाँ नौकरी करने लगी है इसलिए भी उनके दाम्पत्य जीवनपर प्रतिकुल परिणाम हो रहा है - उसके विभिन्न कारण है --

वर्किंग गर्ल्स की समस्या, दूसरी स्त्री का पुरुष के जीवन में प्रवेश, अनैतिक आचरण, वैचारिक एकता का अभाव , नपुंसक पति, धनाभाव, अनपढ एवं गँवार स्त्री, पत्नी का राजनैतिक कार्यों में हिस्सा लेना तथा पुरुष की नारी के प्रति आवश्यक इच्छाओं की पूर्ति की कामना न होने से निराशा आदि विविध समस्याओं के कारण दाम्पत्यजीवन का विघटन और इसी का परिणाम ही परिवार का बिखराव होने में अंतत: दिखाई देता है क्योंकि ग्राहस्थ-जीवन रुपी रथ के पहिए है अगर उनका ही संतुलन खो जाए तो परिवार रुपी रथ चल ही नहीं सकता इसलिए राजेंद्र यादवजी यह चाहते है कि परिवार के लोगों में समझौता बहुत आवश्यक है इसी के बलबूते पर परिवार रुपी इमारत दृढतासे खडी रहती है। यही स्पष्ट होता है।

••